धार्मिक विषमता के आलोक में भारतीय दर्शन में अणुवादी कल्पना (जैन एवं बौद्ध दर्शन के विशेष आलोक में)

जितेन्द्र वर्मा

शोध छात्र
श्री बजरंग स्नातकोत्तर महाविद्यालय
दादर आश्रम, सिकन्दरपुर, बलिया।
सम्बद्ध–महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

मनुष्य सर्वत्र अन्न ही खाता है लेकिन विभिन्न देश और काल में अन्न से भोजन तैयार करने की विधियाँ अनेक रही हैं ठीक इसी प्रकार धर्म मनुष्य की आत्मा का भोजन है एवं विभिन्न विचारधाराओं के दृष्टिगत विभिन्न क्षेत्रों और कालों में उसमें विभिन्न रूप रहे हैं।

धार्मिक विषमता की दृष्टि से भारतीय दर्शन में अणुवादी कल्पना वैशैषिक एवं बौद्ध दर्शनों में भी प्राप्त होती है। जैन एवं वैशैषिक अणुवाद में कुछ समानताएँ हैं। दोनों विचारधाराओं के विचारक अणुओं को अविभाज्य, निरवयव, नित्य, अदृश्य तथा भौतिक जगत का उपादान कारण मानते हैं। दोनों दर्शनों के अणुवादों विचारों में कुछ मतभेद हैं। जैसे, जैन दार्शनिक अणुओं में केवल परिमाणात्मक भेद मानते हैं, किन्तु वैशैषिक दार्शनिक अणुओं में परिमाणात्मक और गुणात्मक दोनों भेद स्वीकार करते हैं। जैन दार्शनिक अणुओं के गुणों को नित्य नहीं मानते, किन्तु वैशैषिक इनके गुणों को भी नित्य मानते हैं। जैन एवं बौद्ध दर्शनों के अणुओं में मुख्य अन्तर यह है कि जैन दर्शन में अणुओं को अस्थायी और विनाशी माना जाता है। जैन दर्शन में आकाश वह अस्तिकाय द्रव्य है जिसमें अन्य अस्तिकाय द्रव्य–जीवन एवं अजीव विस्तृत हैं। आकाश स्वतः न गति की अवस्था में है और न स्थिरता की अवस्था में।[1] जैन दर्शन आकाश का दो भेद स्वीकार करता है – लोकाकाश और आलोकाकाश। इसी दर्शन में काल एक नास्तिकाय द्रव्य है। वर्तना (स्थिति की निरन्तरता) परिणाम (परिवर्तन) क्रिया, परत्व और अपरत्व, प्राचीनता और नवीनता, ज्येष्ठ और कनिष्ठ आदि विचारों एवं व्यवहारों की सार्थकता के लिए काल की सत्ता का अनुमान किया जाता है।[2] इस प्रकार जैन दर्शन के अनुसार कषायों के कारण कर्मानुसार जीव का पुद्गल से आक्रान्त हो जाना ही बन्धन है।[3] इसी दर्शन में सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चरित्र मोक्ष के मार्ग माने जाते हैं (सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रत्राणि मोक्षमार्गः)[4] इसीलिये जैन दर्शन इन्हें त्रिरत्न कहते हैं। जैन साधना के पंचव्रतों (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह) में अहिंसा का शाब्दिक अर्थ है मन, वाणी और कर्म, तीनों से होने वाली हिंसा का परित्याग। यदि व्यक्ति दूसरों का उपकार करने में समर्थ है और वह ऐसा नहीं करता है तो भी वह हिंसा करता है।[5]

मूलतः इन उपरोक्त तथ्यों के विवेचनोपरान्त हम देखते हैं कि जैन दर्शन की विशिष्टता इसका व्यवहारिक उपदेश है। किन्तु इसमें बतायी गयी साधना अत्यन्त कठोर है। अपनी

कठोरता के कारण ही यह सामान्य जन का धर्म नहीं बन सका। इसके द्वारा साधुओं के लिए बताई गई साधना तो कठोर है ही, गृहस्थों के लिये निर्धारित की गयी साधना भी अपेक्षाकृत कठोर है। यह अपनी कठोरता के कारण थोड़े से मुनियों का ही धर्म बन कर रह गया।

वास्तव में जैन धर्म और बौद्ध धर्म के मार्ग पूर्णतः भिन्न हैं। इनके दर्शनिक आधार भिन्न हैं तथा आचार संहिताओं में भी अन्तर है। आत्मा सम्बन्धी विचार में भी आधारभूत अन्तर है। जैन धर्म ने कठोर तपस्या पर बल दिया है, प्राणान्त को मान्यता दी है तथा नग्न रहने को अच्छा माना है। परन्तु बौद्ध धर्म ने मध्यम मार्ग को अपनाया। यह उल्लेखनीय है कि इन दोनों ही धर्मों का उदय एक ही क्षेत्र में हुआ जिससे इन्हें अनेक तत्व विरासत में मिले। ईसवी सन् के प्रारम्भिक शताब्दियों में धर्म एवं दर्शन के क्षेत्र में उल्लेखनीय विकास हुआ। बौद्ध धर्म में महायान सम्प्रदाय का उदय हुआ। हीनयान मतावलम्बी भगवान बुद्ध की पूजा प्रतीक के रूप में करते थे, न कि उनको मानव की तरह मूर्ति बनाकर परन्तु महायान धर्मावलम्बियों ने उनकी मूर्तियाँ बनानी प्रारम्भ की। इसकी लोकप्रियता कनिष्ठ एवं अश्वघोष के प्रयत्नों से हुआ। नागार्जुन एवं असंग के शक्तिशाली तर्कों से इसे विशेष बल मिला। महायान धर्म की बढ़ती हुई लोकप्रियता ने बौद्ध धर्म के प्रसार का मार्ग प्रशस्त किया। यहाँ तक कि विदेशों में भी इसका प्रसार हुआ। जैन धर्म में इस काल में प्रगति हुई। जैन धर्मावलम्बी दो सम्प्रदायों में बँट गये – श्वेताम्बर एवं दिगम्बर। जैन धर्म का प्रसार भारत के विभिन्न हिस्सों में हुआ। हिन्दू धर्म में शैव एवं वैष्णव दो शक्तिशाली सम्प्रदायों का उदय हुआ। इन दोनों सम्प्रदायों ने विदेशियों के लिए भी अपने द्वार खोल दिये। इन सम्प्रदायों के उदय के साथ–साथ मूर्ति पूजा को बल मिला। अभी तक वैदिक मंत्रों के उच्चारण द्वारा विभिन्न देवी–देवताओं की पूजा हिन्दू किया करते थे। परन्तु नवीन सम्प्रदायों ने वैदिक मंत्रों के महत्व को कम किया और विदेशियों के लिए पूजाविधि को सरल बना दिया। शैवमत और वैषणवमत के साथ–साथ शक्ति पूजा का भी महत्व बढ़ा।

जैन एवं वैशैषिक अणुवाद में कुछ समानताएँ हैं। दोनों विचारधाराओं के विचारक अणुओं को अविभाज्य, निरवयव, नित्य, अदृश्य तथा भौतिक जगत का उपादान कारण मानते हैं। दोनों दर्शनों के अणुवादों विचारों में कुछ मतभेद हैं। जैसे, जैन दार्शनिक अणुओं में केवल परिमाणात्मक भेद मानते हैं, किन्तु वैशैषिक दार्शनिक अणुओं में परिमाणात्मक और गुणात्मक दोनों भेद स्वीकार करते हैं। जैन दार्शनिक अणुओं के गुणों को नित्य नहीं मानते, किन्तु वैशैषिक इनके गुणों को भी नित्य मानते हैं।

संक्षेपतः हिन्दू, बौद्ध एवं जैन दर्शन का विकास भी निरन्तर होता रहा। जिन सम्प्रदायों की चर्चा ऊपर की जा चुकी है उनमें अनेक उप सम्प्रदाय विकसित हुये। हिन्दू धर्म में पाशुपत मत तथा पाँचरात्र सिद्धान्त उल्लेखनीय है। ब्रह्मा, लक्ष्मी, दुर्गा, गणेश, कार्तिकेय, कुबेर, इन्द्र, नाग आदि अनेक देवी देवताओं की पूजा हिन्दुओं ने प्रारम्भ की। इसी प्रकार बौद्ध एवं जैन धर्म में अनेक दार्शनिक मतों का विकास हुआ। इन भारतीय धर्मों से किन्नर, गन्धर्व, अप्सरा आदि अर्द्धदेव भी जुड़े। इतना ही नहीं इन देवों के साथ दानवों की भी कल्पना की गयी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. पंचास्तिकायसमयसार, 90।

2. पंचास्तिकायसमयसार, 23–26।
3. तत्वार्थसूत्र, 8/2–2।
4. तत्वार्थसूत्र, 1/1।
5. आउटलाइन्स ऑफ जैनिज्म, पृ0, 34।